गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 252
दि. 12.01.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

न झुकी सोमनाथ की शिला, न टूटी भारत की आत्मा: स्वाभिमान पर्व से प्रधानमंत्री का हुंकार

(जीएनएस)। सोमनाथ। अरब सागर के तट पर अडिग खड़ा सोमनाथ मंदिर एक बार फिर भारत की चेतना, आस्था और आत्मसम्मान का साक्षी बना, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अवसर पर विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए इतिहास, वर्तमान और भविष्य को एक ही सूत्र में पिरो दिया। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि गजनी और औरंगजेब इतिहास के पन्नों में सिमट गए, लेकिन सोमनाथ आज भी अडिग है, जीवंत है और भारत की आत्मा की अमरता का प्रतीक बना हुआ है। उन्होंने कहा कि सोमनाथ पर हुए आक्रमण किसी आर्थिक लूट के लिए नहीं थे, बल्कि भारत की आस्था, विश्वास और आत्मसम्मान को तोड़ने की साजिश थे, लेकिन वे सभी प्रयास असफल रहे। प्रधानमंत्री ने कहा कि सोमनाथ स्वाभिमान पर्व किसी विनाश की स्मृति का आयोजन नहीं है, बल्कि यह हजार वर्षों तक चले संघर्ष, पुनर्निर्माण और विजय की निरंतर यात्रा का उत्सव है। यह पर्व उस भारत का उद्घोष है, जिसने बार-बार टूटकर भी स्वयं को खड़ा किया, जिसने हर आक्रमण के बाद और अधिक दृढ़ होकर अपनी पहचान को पुनर्स्थापित किया। उन्होंने कहा कि इतिहास गवाह है कि विदेशी आक्रांताओं ने सदियों तक भारत की संस्कृति, सभ्यता और आस्था को मिटाने का प्रयास किया, लेकिन न तो सोमनाथ झुका और न ही भारत की आत्मा कमजोर हुई।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि भारत और उसकी आस्था को अलग-अलग नहीं देखा जा सकता। भारत की आत्मा उसकी संस्कृति, उसके देवालयों, उसकी परंपराओं और उसके मूल्यों में बसती है। सोमनाथ उसी आत्मा का जीवंत स्वरूप है। उन्होंने कहा कि आज भले ही तलवारें हाथों में न हों, लेकिन साजिशों के स्वरूप बदल गए हैं। आज भी भारत की एकता, संस्कृति और विश्वास को कमजोर करने के प्रयास हो रहे हैं, इसलिए देश को पहले से अधिक सजग, संगठित और शक्तिशाली बनने की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री ने सोमनाथ के ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि महमूद गजनी से लेकर औरंगजेब तक कई आक्रांताओं ने इस पवित्र स्थल को नष्ट करने का प्रयास किया, लेकिन वे यह समझने में असफल रहे कि सोमनाथ केवल एक मंदिर नहीं है, बल्कि वह विचार है, चेतना है और अमरता का प्रतीक है। 'सोमनाथ' शब्द स्वयं अमरता से जुड़ा हुआ है। हर बार जब-जब इसे गिराने का प्रयास हुआ, हर बार यह और अधिक भव्यता, गौरव और आत्मबल के साथ पुनर्निर्मित हुआ। उन्होंने कहा कि 12वीं शताब्दी से लेकर मराठा शासिका अहिल्याबाई होलकर तक, सोमनाथ का इतिहास पराजय का नहीं, बल्कि निरंतर पुनर्निर्माण और आत्मसम्मान की विजय का इतिहास है।

प्रधानमंत्री मोदी ने स्वतंत्रता के बाद के कालखंड का उल्लेख करते हुए कहा कि दुर्भाग्यवश आज़ादी के बाद भी गुलामी की मानसिकता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई थी। कुछ लोगों ने भारत के गौरवशाली इतिहास से दूरी बनाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि जब सरदार वल्लभभाई पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया, तब उसका भी विरोध किया गया। 1951 में जब तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन के लिए पहुंचे, तब भी आपत्तियां जताई गईं। यह विरोध केवल एक कार्यक्रम का नहीं था, बल्कि यह भारत की आत्मा और उसके इतिहास से मुंह मोड़ने का प्रयास था, जिसे देश ने कभी स्वीकार नहीं किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण केवल पत्थरों से बना ढांचा नहीं था, बल्कि यह स्वतंत्र भारत के आत्मसम्मान, स्वाभिमान और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की घोषणा थी। यह उस भारत का प्रतीक था, जो अपने अतीत से प्रेरणा लेकर भविष्य की ओर बढ़ना चाहता था। उन्होंने कहा कि आज जब देश आज़ादी के अमृत काल में प्रवेश कर चुका है, तब हमें अपने इतिहास को गर्व के साथ स्वीकार करना होगा और उससे शक्ति प्राप्त करनी होगी।

अपने संबोधन की शुरुआत में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पवित्र सोमनाथ मंदिर में इस महापर्व का साक्षी बनना उनके जीवन के सबसे अविस्मरणीय क्षणों में से एक है। उन्होंने कहा कि आज मंदिर के पुनर्निर्माण के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं और यह वही भूमि है, जहां हजार वर्ष पूर्व हमारे पूर्वजों ने अपनी आस्था और विश्वास की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। उन्होंने कहा कि आज भी मंदिर पर लहराती धर्मध्वजा पूरे विश्व को भारत की आध्यात्मिक शक्ति, सांस्कृतिक सामर्थ्य और अडिग संकल्प का संदेश दे रही है। प्रधानमंत्री ने कहा कि सोमनाथ केवल अतीत की कथा नहीं है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य का भी मार्गदर्शक है। यह हमें सिखाता है कि चाहे परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि आस्था अटूट हो, तो कोई शक्ति हमें झुका नहीं सकती। उन्होंने कहा कि भारत की यही शक्ति उसे विश्व पटल पर एक बार फिर सम्मान और नेतृत्व की भूमिका में स्थापित कर रही है।

प्रधानमंत्री मोदी ने आह्वान किया कि सोमनाथ स्वाभिमान पर्व को केवल एक दिन या एक कार्यक्रम तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसे मई 2027 तक एक निरंतर उत्सव के रूप में मनाया जाए। उन्होंने कहा कि यह कालखंड सोमनाथ की हजार वर्ष की ऐतिहासिक यात्रा और 75 वर्षों के पुनर्निर्माण का प्रतीक है, जिसे देश के कोने-कोने तक पहुंचाया जाना चाहिए, ताकि नई पीढ़ी अपने गौरवशाली इतिहास से परिचित हो सके और उससे प्रेरणा ले सके।

इससे पूर्व प्रधानमंत्री मोदी ने सोमनाथ मंदिर में लगभग 40 मिनट तक विधिवत पूजा-अर्चना की। उन्होंने शिवलिंग पर जल, पुष्प और पंचामृत से अभिषेक किया, मंत्रोच्चार के बीच भगवान सोमनाथ से देश की प्रगति, शांति और समृद्धि की कामना की। उन्होंने मंदिर परिसर में उपस्थित पुजारियों, संतों और स्थानीय कलाकारों से संवाद किया और पारंपरिक चेंदा वाद्य बजाकर शोभायात्रा में भी सहभागिता निभाई। पूरे वातावरण में भक्ति, गर्व और स्वाभिमान का अद्भुत संगम देखने को मिला।

उल्लेखनीय है कि 1026 ईस्वी में सोमनाथ मंदिर पर हुए प्रथम आक्रमण की सहस्राब्दी के अवसर पर यह भव्य 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' आयोजित किया जा रहा है। यह आयोजन केवल इतिहास को स्मरण करने का नहीं, बल्कि उस चेतना को जागृत करने का प्रयास है, जिसने भारत को हजार वर्षों तक जीवित, जाग्रत और अडिग बनाए रखा। प्रधानमंत्री के शब्दों में, सोमनाथ न कभी झुका था, न आज झुका है और न ही कभी झुकेगा, क्योंकि जब तक भारत की आस्था जीवित है, तब तक उसकी आत्मा अडिग रहेगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महात्मा मंदिर से गांधीनगर मेट्रो रेल प्रोजेक्ट, फेज-2 का शुभारंभ किया

महात्मा मंदिर, सेक्टर-24, सेक्टर-16, जूना सचिवालय, अक्षरधाम, सचिवालय और सेक्टर-10 सहित कुल 7 मेट्रो रेल स्टेशनों का हुआ उद्घाटन

(जीएनएस)। गांधीनगर, : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को गांधीनगर में मेट्रो रेल प्रोजेक्ट फेज-2 के अंतर्गत महात्मा मंदिर मेट्रो स्टेशन से मेट्रो रेल को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

गांधीनगर के नागरिकों के लिए गौरवपूर्ण इस क्षण के साथ शहर के आधुनिक परिवहन माध्यम में वृद्धि हुई है। इस प्रोजेक्ट के तहत महात्मा मंदिर, सेक्टर-24, सेक्टर-15, जूना सचिवालय, अक्षरधाम, सचिवालय और सेक्टर-10 सहित कुल 7 मेट्रो रेल स्टेशनों का उद्घाटन होने से 7.8 किलोमीटर लंबाई का मेट्रो मार्ग अब आम जनता के लिए खुल गया है।

प्रतिदिन बड़ी संख्या में यात्री नौकरी, व्यापार और पढ़ाई के लिए अहमदाबाद से गांधीनगर के बीच आवागमन करते हैं। अब इन यात्रियों को मोटेरा से महात्मा मंदिर तक कुल 28.25 किमी लंबाई वाले मेट्रो रूट के जरिए तेज, सुरक्षित और आरामदायक यात्रा की सुविधा उपलब्ध होगी।

इसके साथ ही, दोनों शहरों के बीच कनेक्टिविटी बेहतर होगी तथा यातायात के दबाव में कम आएगी। यह प्रोजेक्ट प्रधानमंत्री की दृष्टि के तहत आत्मनिर्भर भारत और आधुनिक शहरी परिवन के स्वप्न को साकार करने वाला गुजरात के विकास में महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' अब 15 जनवरी चलेगा

श्रद्धालुओं की भक्ति और भारी भीड़ को ध्यान में रखकर राज्य सरकार ने लिया निर्णय

इस दौरान कलाकारों की प्रस्तुति सहित अनेक परंपरागत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे : प्रवक्ता मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से सोमनाथ में 8 से 11 जनवरी के दौरान 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' का भव्य आयोजन किया गया। रविवार, 11 जनवरी को प्रधानमंत्री की गरिमामयी उपस्थिति में कई कार्यक्रम हुए।

प्रधानमंत्री ने आज अपने वक्तव्य में भी लोगों की श्रद्धा, आस्था और भगवान भोलेनाथ के प्रति अटूट श्रद्धा को ध्यान में रखकर इस आयोजन की अवधि को लेकर ऐसा भाव व्यक्त किया था कि अधिक से अधिक लोग इसका लाभ ले सकें। राज्य सरकार ने लोगों की भावनाओं और मांगों को ध्यान में रखकर इस पर्व को 15 जनवरी तक बढ़ाने का निर्णय किया है।

राज्य सरकार के प्रवक्ता एवं कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने इस संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री की प्रेरक उपस्थिति में सोमनाथ में 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' ऐतिहासिक रूप से मनाया जा रहा है।

इस पर्व के तहत प्रधानमंत्री की प्रेरक उपस्थिति में आयोजित 'शौर्य यात्रा' में एक लाख से अधिक लोग शामिल हुए और भगवान शिव की भक्ति में लीन दिखे।

8 से 11 जनवरी तक जिस प्रकार से कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, उसी शृंखला में अब 15 जनवरी तक इस अटूट श्रद्धा के 1000 वर्षों का उत्सव मनाया जाएगा, जिसमें देश भर के श्रद्धालु शामिल होंगे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व और उप मुख्यमंत्री श्री हर्षभाई संघवी के मार्गदर्शन में राज्य मंत्रिमंडल के सदस्यों सहित समूचे प्रशासन के सफल प्रयासों के कारण ही यह पर्व सफल रहा है।

भक्तिमय वातावरण में श्रद्धालुओं को अनेक परंपरागत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति के साथ रोशनी का रोमांच भी देखने को मिलेगा।

इस पर्व के अंतर्गत प्रधानमंत्री की गरिमामयी उपस्थिति में 72 घंटे का अखंड ओंकार नाद, 3000 ड्रोन का मेगा शो और 108 अश्वों की शौर्य यात्रा सहित विभिन्न राज्यों से सोमनाथ पहुंचे कलाकारों की अनेक प्रस्तुतियां आकर्षण का केंद्र बनीं।

भारतीय संस्कृतिक की धरोहर को पुनःस्थापित करने वाले इस धार्मिक समारोह का देश भर के अधिक से अधिक लोग आनंद ले सकें, इसके लिए राज्य सरकार ने इस पर्व को 15 जनवरी तक बढ़ाने का निर्णय लिया है।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व की भव्य शौर्य यात्रा में शामिल हुए लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सड़क पर खड़े हजारों लोगों ने 'हर हर महादेव' और 'जय सोमनाथ' के जयघोष के साथ प्रधानमंत्री का स्वागत किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी रविवार को सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत भव्य शौर्य यात्रा में शामिल हुए। इस दौरान सोमनाथ के शंख सर्कल पर उपस्थित हजारों लोगों ने 'हर हर महादेव' और 'जय सोमनाथ' के दिव्य जयघोष के साथ प्रधानमंत्री का पुष्पों से स्वागत किया। प्रधानमंत्री ने शंख सर्कल से हमीरसिंह सर्कल तक सड़क पर खड़े विराट जनसमूह का अभिवादन स्वीकार किया। सोमनाथ के इतिहास की यह सबसे बड़ी शौर्य यात्रा 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का भी प्रतीक बन गई।

रूट पर विभिन्न राज्यों के कलाकारों ने भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत के रूप में विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं।

इस मौके पर प्रधानमंत्री के साथ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्षभाई संघवी, प्रवक्ता मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी और शिक्षा मंत्री डॉ. प्रद्युमन वाजा भी मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की शौर्य सभा में राताधर गांव की बिटिया कोमल सोलंकी ने प्लेकार्ड के जरिए ऑपरेशन सिंदूर की शौर्य गाथा को कलात्मक तरीके से उजागर किया

- **ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के जिक्र के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का बनाया सुंदर स्केच**
- **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी निःस्वार्थ भाव तरीके से और बिना किसी भेदभाव के राष्ट्र की प्रगति के लिए कठोर परिश्रम कर रहे हैं : बेटी ज्योति सोलंकी ने प्रधानमंत्री के लिए अपना अनन्य भाव व्यक्त किया**

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अनन्य प्रशंसक नन्ही बिटिया कु. ज्योति सोलंकी रविवार को सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत आयोजित शौर्य सभा में पहुंचीं। तालाला तहसील के रातीधार गांव की इस बेटी ने ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के उल्लेख के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का एक कलात्मक स्केच बनाकर इस शौर्य सभा में उत्साह के साथ प्रदर्शित किया।

कक्षा 10 में पढ़ाई करने वाली ज्योति ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी निःस्वार्थ भाव तरीके से और बिना किसी भेदभाव के राष्ट्र की प्रगति के लिए कठोर परिश्रम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने देश को सुरक्षित रखने और आतंकवाद से बचाने के लिए सफलतापूर्वक ऑपरेशन सिंदूर चलाया, जिससे प्रेरित होकर उन्होंने यह स्केच बनाया है।

उल्लेखनीय है कि इस प्लेकार्ड में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के चित्र के साथ कलात्मक रूप से 'ऑपरेशन सिंदूर' लिखा हुआ है, जो भारतीय सेना के शौर्य का प्रतीक है। साथ ही, इसमें ऑपरेशन सिंदूर के शुरू होने की तारीफ भी लिखी हुई है।

इस शौर्य सभा में उपस्थित विशाल जनसमूह ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के ऊर्जावान और प्रेरक संबोधन को बड़ी ही दिलचस्पी और गौर से सुना।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सभा में जनउत्साह का अनोखा दृश्य

सोमनाथ निवासी दक्षाबेन परमार स्वयं द्वारा बनाए गए विशेष चित्रों को लेकर प्रधानमंत्री की सभा में पहुंचीं

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत आयोजित प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सभा में जनसैलाब उमड़ पड़ा। समग्र सभा स्थल पर भक्ति, गौरव और राष्ट्रभावना का अनोखा संगम देखने को मिला।

इस अवसर पर सोमनाथ निवासी दक्षाबेन परमार विशेष रूप से तैयार किए गए चित्रों को लेकर पहुंची थीं। उन्होंने पीएम की माता हीराबा और प्रधानमंत्री का पेंसिल स्केच तथा अन्य एक चित्र तैयार किया था। उन्होंने इन चित्रों के माध्यम से प्रधानमंत्री के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

उन्होंने भावुक होकर कहा कि आज इस बात का गौरव दोगुना हो गया कि उनका जन्म सोमनाथ की पवित्र भूमि पर हुआ है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अडिग स्वाभिमान और राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक सोमनाथ क्षेत्र तथा प्रभास की धरती को वैश्विक स्तर पर विशेष गौरव प्राप्त हुआ है।

सोमनाथ की बेटी के तौर पर श्रीमती दक्षाबेन परमार ने प्रधानमंत्री के प्रति आभार और कृतज्ञता व्यक्त की।

इस अवसर पर सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का महात्म्य और अधिक उजागर हुआ और उपस्थित जनसमूह में गौरव की भावना देखने को मिली।

केसरी साफे में सुसज्जित बुजुर्गों ने प्रधानमंत्री के प्रति आदर-सम्मान के साथ ही स्वाभिमान और शौर्य का भाव व्यक्त किया

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ में आयोजित शौर्य स्वाभिमान सभा में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति वरिष्ठ नागरिकों का अनोखा भाव और उत्साह देखने को मिला।

वेरावल के सीनियर सिटीजन्स ट्रस्ट के 65 से अधिक बुजुर्ग एक जैसा केसरी साफा बांधकर शौर्य स्वाभिमान सभा में मौजूद रहे और प्रधानमंत्री के स्वागत-सम्मान के साथ राष्ट्रभावना को अभिव्यक्त किया। इस अवसर पर सीनियर सिटीजन्स ट्रस्ट वेरावल के अध्यक्ष श्री दीपकभाई टीलावत ने कहा "सोमनाथ की पवित्र भूमि पर इस ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनने का हमें गर्व है। प्रधानमंत्री के प्रति आदर और सम्मान व्यक्त करने के लिए हम सभी ने केसरी साफा बांधकर उनका स्वागत-सत्कार करने का निश्चय किया है।"

शौर्य, स्वाभिमान और राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक इस सभा में वरिष्ठ नागरिकों की उत्साहपूर्ण मौजूदगी ने पूरे वातावरण को गौरवपूर्ण और प्रेरणादायी बना दिया।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व : शौर्य सभा

शौर्य सभा में लोगों ने प्लेकार्ड दिखाकर भारतीय अस्मिता के प्रतीक सोमनाथ की गाथा को अनूठे तरीके से उजागर किया

- **प्लेकार्ड के माध्यम से प्रधानमंत्री के विजन और विकसित भारत के संकल्प का प्रेरक संदेश भी फैलाया**
- **लोगों ने अपने प्रिय नेता और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आगमन पर प्रेरक प्लेकार्ड ऊंचा कर उनका स्वागत किया**

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के अंतर्गत रविवार को आयोजित शौर्य सभा में उत्साह से लबरेज लोगों ने सोमनाथ और भारत के शौर्य एवं संकल्प को प्लेकार्ड के माध्यम से अभिव्यक्त किया।

सभा में मौजूद लोगों ने 'शाश्वत और अविनाशी सोमनाथ', 'अखंड भारत-अखंड सोमनाथ', 'शौर्य एवं साहस की गाथा', 'संकल्प और स्वाभिमान की गाथा', 'लौह पुरुष की संकल्प गाथा' और 'आस्था अमर है' जैसे संदेश देने वाले प्लेकार्ड दिखाकर भारतीय अस्मिता के प्रतीक सोमनाथ की गाथा को उजागर किया।

इसके अलावा, लोगों ने आधुनिक भारत के संकल्प को चरितार्थ करने वाले प्लेकार्ड के माध्यम से प्रेरक संदेश भी फैलाया, जिन पर तरह-तरह के स्लोगन लिखे हुए थे, जैसे कि- 'विकसित भारत-2047', 'सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय', 'आत्मनिर्भर युवा और आत्मनिर्भर भारत' और 'मेरी धरती-मेरा प्रोडक्ट'। ये सभी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन को उजागर करते हैं।

इस शौर्य सभा में उपस्थित लोगों ने अपने प्रिय नेता और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आगमन पर प्लेकार्ड को ऊंचा कर हर्षोल्लास के साथ उनका स्वागत किया।

संपादकीय

वायु प्रदूषण से संघर्ष सतत सक्रियता ही समाधान का एकमात्र मार्ग

यह स्वागतयोग्य है कि देर से ही सही, दिल्ली और एनसीआर के सभी राज्यों ने वायु प्रदूषण से निपटने के लिए सतत रूप से सक्रिय रहने का निर्णय किया है। वर्षों से हर सर्दी में जहरीली हवा के साए में जीने को मजबूर होती दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों के लिए यह फैसला उम्मीद की एक किरण की तरह है। अब तक की स्थिति यह रही है कि जैसे ही प्रदूषण का स्तर खतरनाक सीमा पार करता है, वैसे ही आपात कदम उठाए जाते हैं और हालात कुछ सुधरते ही सब कुछ पहले जैसा हो जाता है। इस चक्र ने समस्या को जड़ से खत्म करने के बजाय केवल उसे टालने का काम किया है। ऐसे में यदि दिल्ली और एनसीआर के राज्य सचमुच पूरे साल वायु प्रदूषण रोकने के उपायों पर अमल करने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं, तो इसके सकारात्मक परिणाम सामने आ सकते हैं।

वायु प्रदूषण कोई मौसमी बीमारी नहीं है, जो साल के कुछ महीनों में उभरती हो और फिर खुद-ब-खुद खत्म हो जाए। यह एक दीर्घकालिक संकट है, जिसकी जड़ें शहरीकरण की अव्यवस्थित प्रक्रिया, वाहनों की बेतहाशा बढ़ोतरी, औद्योगिक उत्सर्जन, निर्माण गतिविधियों की अनदेखी, कचरा प्रबंधन की विफलता और कृषि अपशिष्ट जलाने जैसी प्रवृत्तियों में गहराई तक फैली हुई हैं। इसके बावजूद अब तक नीति निर्धारण और क्रियान्वयन का तरीका ऐसा रहा है, मानो यह समस्या केवल अक्टूबर से जनवरी के बीच ही गंभीर होती हो। इसी सोच ने हालात को और बिगाड़ा है। आज स्थिति यह है कि जब वायु प्रदूषण सिर उठाता है, तब अलग-अलग राज्य अपने-अपने स्तर पर उससे निपटने के लिए सक्रिय होते हैं। कहीं स्कूल बंद किए जाते हैं, कहीं निर्माण कार्य पर रोक लगती है, कहीं वाहनों के आवागमन पर नियंत्रण किया जाता है। ये सारे उपाय तात्कालिक राहत तो देते हैं, लेकिन समस्या के मूल कारणों को खत्म नहीं कर पाते। यही कारण है कि हर साल वही कहानी दोहराई जाती है और प्रदूषण का स्तर नए रिकॉर्ड बना देता है। यह किसी से छिपा नहीं कि इन दिनों दिल्ली-एनसीआर वायु प्रदूषण से बुरी तरह त्रस्त है और उससे निपटने के लिए जो भी कदम उठाए जा रहे हैं, वे अपर्याप्त सिद्ध हो रहे हैं। ऐसे में दिल्ली एवं एनसीआर के राज्यों द्वारा केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय और वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग को सौंपी गई वह योजना महत्वपूर्ण मानी जा सकती है, जिसके तहत 15 जनवरी से पूरे साल प्रदूषण रोधी उपायों पर काम करने का निर्णय लिया गया है। इस योजना के अंतर्गत प्रदूषण के विभिन्न स्रोतों की पहचान कर उनके लिए अलग-अलग रणनीतियां बनाने की बात कही गई है। साथ ही, इन उपायों की हर महीने समीक्षा करने का प्रस्ताव भी है, ताकि यह देखा जा सके कि प्रयास कितने प्रभावी हैं और कहां सुधार की जरूरत है। यह दृष्टिकोण सही दिशा में उठाया गया कदम है, क्योंकि समस्या की गंभीरता को देखते हुए निरंतर निगरानी और सुधार अनिवार्य है। फिर भी एक बड़ा प्रश्न बना हुआ है कि आखिर केवल दिल्ली और उससे सटे राज्य ही वायु प्रदूषण से पार पाने के लिए आगे क्यों आए हैं। यह समस्या अब सिर्फ राजधानी क्षेत्र तक सीमित नहीं रही। सर्दियों में उत्तर भारत के लगभग सभी राज्य, चाहे वे पंजाब हों, हरियाणा हों, उत्तर प्रदेश हो, राजस्थान हो या बिहार, वायु प्रदूषण की चपेट में आ जाते हैं। कई बार तो छोटे शहरों और कस्बों की हवा भी महानगरों से अधिक जहरीली पाई जाती है। इसके बावजूद राष्ट्रीय स्तर पर एक समग्र और बाध्यकारी रणनीति का अभाव दिखाई देता है। आज भारत की गिनती उन देशों में होने लगी है, जहां की वायु सबसे अधिक प्रदूषित मानी जाती है। इसके दुष्परिणाम केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अर्थव्यवस्था, उत्पादकता और जीवन की गुणवत्ता पर भी गहरा असर डालते हैं। अस्थमा, हृदय रोग, फेफड़ों से जुड़ी बीमारियां और समय से पहले होने वाली मौतें वायु प्रदूषण की भयावह तस्वीर पेश करती हैं। बच्चों और बुजुर्गों पर इसका प्रभाव और भी गंभीर होता है। इसके बावजूद यदि हम इसे केवल कुछ शहरों की समस्या मानकर सीमित प्रयास करते रहेंगे, तो स्थिति सुधरने के बजाय और बिगड़ती जाएगी।

उचित यही होगा कि केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय देश के सभी राज्यों से वायु प्रदूषण से निपटने की ऐसी योजनाओं पर काम करने को कहे, जो साल भर चलती रहें और जिनका पालन अनिवार्य हो। राज्यों के बीच समन्वय बेहद जरूरी है, क्योंकि हवा किसी प्रशासनिक सीमा को नहीं मानती। एक राज्य में की गई लापरवाही का असर दूसरे राज्य पर भी पड़ता है। इसलिए क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर साझा जिम्मेदारी की भावना विकसित किए बिना इस संकट से उबरना संभव नहीं है।

पुलिस पर पथराव की सजा है बुलडोजर नीति

> “ रिपोर्ट में बताया गया है कि असम, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और दिल्ली वो पांच राज्य हैं, जहां धार्मिक हिंसा और प्रदर्शनों के बाद मुस्लिम समुदाय के खिलाफ सरकार की भेदभावपूर्ण नीति देखने को मिली है और यहां सजा के तौर पर संपत्ति की तोडफ़ोड़ की गई है

पुलिस का दायित्व है कानून-व्यवस्था बनाए रखना और कानूनों की पालना कराना। ऐसे में पुलिस की जिम्मेदारी निभाने के दौरान यदि पुलिसकर्मियों पर हमला हो तो मानना चाहिए कि देश का एक तबका कानून और अदालतों पर भरोसा नहीं रखता है। दिल्ली में तुर्कमान गेट पर अवैध अतिक्रमण हटाने के दौरान यही हुआ। विपक्षी राजनीतिक दल इस मुद्दे पर अब चुनावी रोटियां सेंकने में लगे हुए हैं। अल्पसंख्यक वोट की राजनीति के कारण ऐसे हालात पैदा होते हैं। दिल्ली महानगर निगम ने हाईकोर्ट के निर्देशों की पालना में तुर्कमान गेट के पास फैज-ए-इलाही दरगाह के बाहर अतिक्रमण हटाने गए दस्ते और पुलिसकर्मियों पर पथराव किया गया। अतिक्रमण हटाने के दौरान प्रशासन पर हुई पत्थरबाजी के मामले में पुलिस ने पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। यह पहला मौका नहीं है जब अल्पसंख्यक इलाके में अवैध अतिक्रमण हटाने के दौरान पुलिस और कार्मिकों को पथराव का सामना करना पड़ा हो। इस वर्ष के शुरुआत में ही देश में कई स्थानों पर अल्पसंख्यक इलाकों में अतिक्रमण हटाने के दौरान पुलिस और प्रशासन पर सुनियोजित तरीके से हमले किए गए। इसके बाद पुलिस ने सख्ती का इस्तेमाल कर पत्थरबाजों के अवैध अतिक्रमण ढहाए। जयपुर शहर से करीब 40 किलोमीटर दूर चौमूं बस स्टैंड के पास स्थित कलंदरी मस्जिद के सामने लंबे समय से पत्थर पड़े हुए थे। इसके अलावा यहां रेलिंग बनाई गई थी, जो कथित तौर पर अवैध थी। 25 दिसंबर 2025 की रात मस्जिद कमेटी और नगर निगम के बीच इन रेलिंग और पत्थरों को हटाने पर सहमति बनी थी। इसके बाद पुलिस ने रेलिंग हटाने की कार्रवाई शुरू की थी। इससे भीड़ ने पुलिस पर पत्थरबाजी शुरू कर दी। हमले में कई पुलिसकर्मी घायल भी हुए। हालात बिगडने पर पुलिस ने आंसू गैस का छिडक़ाव और लाठीचार्ज कर स्थिति को संभाला था। इसके बाद अतिक्रमण वाली जगहों पर बुलडोजर चलाया गया। कार्रवाई में 25 मकानों में बनी करीब 40 दुकानों के बाहर तोडफ़ोड़ की गई है। तीन कांपलेक्स को सीज किया गया है। उत्तर

प्रदेश में ऐसे अतिक्रमण हटाने के दौरान पत्थरबाजी करना अब आसान नहीं रहा है। दरअसल पत्थरबाजों को समझ में आ गया है योगी सरकार उनके अवैध घरों- व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर बुलडोजर चलवाए बिना नहीं मानेगी। यही वजह है कि लखनऊ विकास प्राधिकरण ने लखनऊ के अलग-अलग इलाकों में अवैध निर्माणों को सील किया है। प्राधिकरण ने गोमती नगर विस्तार और चिनहट इलाके में अभियान चलाया है, जिसमें 4 अवैध निर्माण को सील किया गया है। वहीं, दुबग्गा इलाके में लखनऊ विकास प्राधिकरण से लेआउट स्वीकृत कराए बिना की जा रही अवैध प्लाटिंग को ध्वस्त कर दिया गया है। यहां 85 बीघा क्षेत्रफल में 7 अवैध प्लाटिंग की जा रही थीं, जिन्हें ध्वस्त कर दिया गया है। पत्थरबाज अतिक्रमी कानून हाथ में लेने पर उत्तर प्रदेश सरकार का सख्त रवैया संभल में देख चुके हैं। संभल की शाही जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान हुई हिंसा के बाद अदालत के आदेश पर मस्जिद के आसपास बड़े पैमाने पर बिजली चोरी और अतिक्रमण हटाने का अभियान चलाया गया जिसमें अवैध कनेक्शन काटे गए और कब्जे हटाए गए। समाजवादी पार्टी के सांसद जियाउर रहमान बर्क के इलाके में बुलडोजर की कार्रवाई की गई थी। संभल में हिंसा के बाद पुलिस ने सख्त कार्रवाई की। करीब दर्जनभर अवैध दुकानों पर बुलडोजर चलाया गया। उत्तर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा था कि संभल या किसी अन्य जिले में किसी को भी अराजकता फैलाने की इजाजत नहीं दी जानी चाहिए। संभल का एक भी दंगाई बख्शा नहीं जाना चाहिए। इसी तरह प्रयागराज हिंसा के बाद, मुख्य आरोपी जावेद अहमद के घर को बुलडोजर से ध्वस्त कर दिया गया। नमाज के बाद भडक़ी हिंसा मामले के मुख्य आरोपी मोहम्मद जावेद उर्फ जावेद पंप के घर पर रविवार दोपहर बुलडोजर चलाया गया। जावेद के दो मंजिला आलीशान मकान पर भी ध्वस्तीकरण की कार्रवाई हुई। सपा नेता आजम खान के जौहर विश्वविद्यालय का उर्दू गेट 9 मार्च 2019 को ध्वस्त कर दिया गया था। आजम खान ने सरकारी जमीन पर मुख्य सडक़ का अतिक्रमण करते हुए गेट बनवाया था। गेट के निर्माण में लगभग 40 लाख रुपए खर्च हुए थे, जिसे भाजपा के सत्ता में आने के बाद ध्वस्त कर दिया गया। लखनऊ के अकबर नगर में विध्वंस अभियान के दौरान 1200 से अधिक अवैध ढांचे ध्वस्त किए गए। कुकरैल नदी के सौंदर्यीकरण और पुनरुद्धार परियोजना के तहत लखनऊ विकास प्राधिकरण द्वारा लखनऊ के अकबर नगर में अब तक 1200 से अधिक अवैध संपत्तियों को ध्वस्त किया जा चुका है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जिन राज्यों में भाजपा का शासन है, वहां पत्थरबाजों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की गई है। इसके विपरीत विपक्षी दलों के शासन वाले राज्यों में अलबत्ता तो ऐसे अतिक्रमण विरोधी अभियान चलाए ही नहीं गए। यदि चलाए भी गए तो पत्थरबाजों के प्रति नरम रवैया अपनाया गया। हरियाणा में भाजपा की सरकार है। यहां पर भी पत्थरबाजों की इमारतों पर बुलडोजर चला कर सरकार ने संदेश दिया कि कानून हाथ में लेने वालों की खैर नहीं है। हरियाणा के नुंह में ब्रजमंडल धार्मिक यात्रा के दौरान भडक़ी हिंसा के बाद 600 से ज्यादा अवैध निर्माण ध्वस्त किए गए। पूरे हरियाणा में करीब 104 एफआईआर दर्ज की गई। करीब 216 गिरफ्तारियां हुई। मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार ने पत्थरबाजों को नहीं बख्शा। मध्य प्रदेश के छतरपुर में थाने पर पथराव करने की घटना सामने आई थी। भीड़ को पथराव के लिए उकसाने वाले हाजी शहजाद अली की कोठी पर बुलडोजर चलाया गया। अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों के एक समूह ने गांधीनगर शहर से 38 किमी दूर बहियाल गांव में एक आपत्तिजनक सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर कई दुकानों और वाहनों को क्षतिग्रस्त कर दिया और पथराव किया। पुलिस ने गांव में हुई झड़प और दंगे के लिए लगभग 60 लोगों को हिरासत में लिया था। गांधी नगर में गरबा पर पथराव करने वालों के 186 अवैध इमारत जमीदोंज कर दी गई। हाउसिंग एंड लैंड राइट्स नेटवर्क की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2022 और 2023 में भारत में लगभग 1.5 लाख घरों (153820) को गिराया गया, जिससे 7.4 लाख से ज्यादा लोग बेदखल हुए। यह आंकड़े 2022 (46371 घर) और 2023 (107449 घर) के डेटा पर आधारित हैं और कई कारणों जैसे अवैध निर्माण, शहरी विकास और अन्य प्रशासनिक वजहों से ये घर ध्वस्त हुए। ये घर बुलडोजर कार्रवाई, अवैध निर्माण, शहरी नियोजन और अन्य प्रशासनिक निर्णयों के कारण गिराए गए। 'भारत में बुल्डोजर अन्याय' और 'भारत के बुल्डोजर अन्याय में जेसीबी की भूमिका और जिम्मेदारी' नाम से दो रिपोर्ट एमनेस्टी इंटरनेशनल ने जारी की। इन रिपोट्र्स में बताया गया है कि अप्रैल और जून 2022 के बीच लगभग 128 संपत्तियों पर बुल्डोजर से तोडफ़ोड़ की कार्रवाई हुई। रिपोर्ट में बताया गया है कि असम, गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और दिल्ली वो पांच राज्य हैं, जहां धार्मिक हिंसा और प्रदर्शनों के बाद मुस्लिम समुदाय के खिलाफ सरकार की भेदभावपूर्ण नीति देखने को मिली है और यहां सजा के तौर पर संपत्ति की तोडफ़ोड़ की गई है। रिपोर्ट में इस बात का जिक्र नहीं किया गया कि किस तरह अतिक्रमण हटाने के दौरान पुलिस और प्रशासनिक दस्ते पर पथराव किए। हिंसा भडक़ाने के प्रयास किए गए। यह निश्चित है कि देश में ऐसे मामलों में कार्रवाई को जब तक राजनीतिक चश्मे से वोट बैंक के कारण देखा जाता रहेगा, पत्थबरबाजों के हौसले बुलंद रहेंगे। पुलिस पर हमले जायज नहीं हैं।

प्रेरणा

लोकआस्था, इतिहास और प्रकृति का संगम: लोहड़ी का उत्सवी लोकजीवन

लोहड़ी उत्तर भारत, विशेषकर पंजाब, हरियाणा और आसपास के क्षेत्रों का ऐसा लोकपर्व है, जिसमें सर्दी की कठोरता के बीच जीवन की गर्माहट, उल्लास और सामूहिकता का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है। यह पर्व केवल मौसम परिवर्तन का संकेत नहीं देता, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के गहरे संबंध, सामाजिक चेतना और लोकइतिहास को भी जीवंत करता है। लोहड़ी से जुड़ी परंपराओं और रीति-रिवाजों पर दृष्टि डालें, तो स्पष्ट होता है कि इसमें प्रागैतिहासिक मान्यताओं, पौराणिक विश्वासों और लोकनायकों की कथाओं का सुंदर समन्वय है। यही कारण है कि लोहड़ी एक साधारण त्योहार न होकर जनजीवन में गहराई तक रचा-बसा उत्सव बन गई है।

मान्यता है कि लोहड़ी की अग्नि का संबंध दक्ष प्रजापति की पुत्री सती के योगाग्नि-दहन से जोड़ा जाता है। यह अग्नि आत्मशुद्धि और नकारात्मक शक्तियों के नाश का प्रतीक मानी जाती है। समय के साथ इसमें लोकजीवन की स्मृतियां भी जुड़ती चली गईं। लोहड़ी को पंजाब के वीर लोकनायक दुल्ला भट्टी की कथा से जोड़कर देखा जाता है, जिसने इस पर्व को सामाजिक न्याय और मानवीय संवेदना का प्रतीक बना दिया। दुल्ला भट्टी मुगल शासक अकबर के समय पंजाब में रहता था और उसे पंजाब का नायक कहा जाता था। उस दौर में संदल बार क्षेत्र में निर्धन परिवारों की लड़कियों को बलपूर्वक अमीरों के हाथों गुलामी के लिए बेच दिया जाता था। दुल्ला भट्टी ने इस अमानवीय प्रथा के विरुद्ध विद्रोह किया। उसने न केवल लड़कियों को मुक्त कराया, बल्कि उनकी शादी हिंदू लड़कों से करवा कर सभी व्यवस्थाएं स्वयं कीं। भट्टी राजपूत वंश से संबंध रखने वाला यह लोकनायक आज भले ही इतिहास की पुस्तकों में सीमित हो, लेकिन लोकगीतों और लोहड़ी की अग्नि के साथ उसकी स्मृति आज भी जीवित है।

लोहड़ी के अगले दिन माघ मास का आगमन होता है, जिसे माघी के रूप में जाना जाता है। हिंदू परंपरा में यह दिन अत्यंत पवित्र माना गया है। इस दिन नदी में स्नान कर दान-पुण्य करने की परंपरा है। विशेष रूप से गन्ने के रस से बनी खीर और अन्य मिष्ठानों का सेवन किया जाता है। यह धार्मिक आस्था केवल कर्मकांड तक सीमित नहीं, बल्कि समाज में आपसी सहयोग और समानता की भावना को भी प्रबल करती है। दान का अर्थ केवल वस्तु देना नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में सुख और संतुलन लाने की भावना से जुड़ा होता है। लोहड़ी का समय शीत ऋतु की चरम अवस्था का होता है। तापमान कई क्षेत्रों में शून्य के आसपास पहुंच जाता है, घना कोहरा छा जाता है और प्रकृति मानो ठहर-सी जाती है। लेकिन इसी ठिठुरती ठंड के बीच अलाव की आग जीवन में ऊर्जा और उत्साह का संचार करती है। पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में लोग लोहड़ी की तैयारी बड़े परिश्रम और उल्लास के साथ करते हैं। लकड़ियां एकत्र कर बड़े-बड़े अलाव सजाए जाते हैं। इन अलावों में केवल ठंड से बचने की व्यवस्था नहीं होती, बल्कि जीवन की गर्मजोशी, सामूहिकता और संघर्ष की प्रतीकात्मक लौ जलती है। लोग अलाव के चारों ओर इकट्ठा होकर नाचते-गाते हैं, लोकगीत गूंजते हैं और मन से सारी थकान उतर जाती है।

लोहड़ी पौष मास की अंतिम रात को मनाई जाती है। लोकविश्वास है कि इस रात हमारे बुजुर्ग अग्नि के सामने बैठकर मंत्रों का उच्चारण करते थे और सूर्यदेव से प्रार्थना करते थे कि वे अपनी किरणों से पृथ्वी को पर्याप्त गर्मी प्रदान करें, ताकि कठोर ठंड से किसी को हानि न पहुंचे। यह परंपरा मनुष्य और प्रकृति के बीच संवाद का प्रतीक है, जिसमें प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवनदाता के रूप में देखा गया है।

हिंदू पंचांग के अनुसार लोहड़ी मकर संक्रांति से एक दिन पहले मनाई जाती है। यह वह समय होता है, जब सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर अग्रसर होता है। धरती सूर्य से अपने सुदूर बिंदु से लौटकर फिर उसकी ओर मुख करना प्रारंभ कर देती है। जनवरी का यह काल वर्ष का सबसे शीतमय समय माना जाता है, लेकिन इसके साथ ही शीत ऋतु के अंत की शुरुआत भी होती है। पौष मास समाप्त होकर माघ मास का आरंभ उत्तरायण काल का संकेत देता है, जिसे शास्त्रों में अत्यंत शुभ बताया गया है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी उत्तरायण काल की महत्ता का उल्लेख मिलता है। इस अवसर पर गंगा स्नान और गंगासागर जैसे तीर्थों पर श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ती है। यह धार्मिक आस्था व्यक्ति को आत्मशुद्धि और नवजीवन की प्रेरणा देती है।

पंजाब में लोहड़ी केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन का उत्सव है। पंजाबी स्वभाव से ही ऊर्जावान, हंसमुख और उत्सवप्रिय माने जाते हैं। लोहड़ी इस स्वभाव को और अधिक जीवंत बना देती है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में यह पर्व लोगों को अपनी व्यस्तता से बाहर निकालकर एक-दूसरे से मिलने, हंसी-मजाक करने और अपने सुख-दुख साझा करने का अवसर देता है। यह सामाजिक संवाद रिश्तों को मजबूत करता है और समुदाय की भावना को प्रगाढ़ बनाता है। भारत के अन्य हिस्सों में यही पर्व मकर संक्रांति और पोंगल के रूप में मनाया जाता है। नाम अलग हो सकते हैं, पर संदेश एक ही है—प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और आपसी भाईचारे की भावना।

लोहड़ी की संध्या पर अग्नि का पूजन विशेष महत्व रखता है। जैसे होली के अवसर पर होलिका दहन किया जाता है, उसी प्रकार लोहड़ी की रात लकड़ियां एकत्र कर अग्नि जलाई जाती है। तिल, मूंगफली, रेवड़ी, गुड़ और गजक अग्नि में अर्पित किए जाते हैं। यह अर्पण समृद्धि, स्वास्थ्य और सकारात्मक ऊर्जा की कामना का प्रतीक माना जाता है। बच्चों की भागीदारी इस पर्व को और भी जीवंत बना देती है। सुबह से ही बच्चों की टोलियां घर-घर जाकर लोहड़ी के गीत गाती हैं और लकड़ियां तथा प्रसाद एकत्र करती हैं। उनका प्रसिद्ध गीत—“सुंदर मुंदरिये हो, तेरा कौन बेचारा हो, दुल्ला भट्टी वाला हो”—लोकइतिहास को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का माध्यम बन जाता है। यह परंपरा बच्चों में सामूहिकता, संवाद और सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान की भावना विकसित करती है।

विश्व को खतरे में डालते ट्रंप, अहंकार से भरे हुए हैं अमेरिकी राष्ट्रपति

नए वर्ष का आगमन होते ही एक अप्रत्याशित घटनाक्रम में अमेरिकी सेना वेनेजुएला पर हमला कर वहां के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को उनकी पत्नी समेत उठाकर अमेरिका ले आई। विश्व को हैरान करने वाली इस घटना को पहले तो अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वेनेजुएला के राष्ट्रपति के कथित संरक्षण में चल रहे नारकोटिक्स आतंक से जोड़ा, लेकिन शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि इस हमले का मूल उद्देश्य वेनेजुएला के तेल भंडारों पर कब्जा करना था।

वेनेजुएला में कच्चे तेल के सबसे अधिक भंडार हैं। ट्रंप ने जिस तरह यह कहा कि अब वेनेजुएला के तेल को अमेरिका बेचेगा और वहां की अंतरिम राष्ट्रपति को उनका सहयोग करना होगा, उससे साफ है कि अमेरिकी राष्ट्रपति दादागीरी पर उतर आए हैं। वे संयुक्त राष्ट्र चार्टर के साथ अंतरराष्ट्रीय नियमों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। इसकी कल्पना करना कठिन था कि लोकतंत्र की दुहाई देने वाला अमेरिका किसी देश के राष्ट्रपति का अपहरण कर लेगा, लेकिन ट्रंप के नेतृत्व में अमेरिका ने ऐसा ही किया। यह चोरी और सीनाजोरी ही है। अमेरिका ऐसी हरकतें पहले भी करता रहा है। दूसरे विश्व युद्ध के बाद से उसने अपने संकीर्ण स्वार्थों को पूरा करने के लिए अनेक देशों पर हमले किए अथवा वहां छल-छद्म से तख्तापलट कराया। इस कोशिश में उसे कई बार मुंह की खानी पड़ी, लेकिन वह सबक सीखने को तैयार नहीं। अमेरिका को वियतनाम में मात मिली।

इसके बाद अफगानिस्तान, इराक और लीबिया में भी वह वैसा कुछ नहीं कर सका, जिसका दावा कर उसने इन देशों पर हमला किया था। वह इन देशों में कुल मिलाकर नाकाम ही रहा। उसकी इस नाकामी का दुष्परिणाम इन देशों ने अस्थिरता और अशांति के रूप में देखा। वेनेजुएला पर अमेरिकी हमले की विश्व के अनेक देशों ने निंदा की, लेकिन कई देश ऐसे भी रहे, जिन्होंने ट्रंप की सैन्य कार्रवाई का समर्थन किया अथवा जो मौन बने रहे। चूंकि अमेरिका एक बड़ी आर्थिक एवं सैन्य शक्ति है, इसलिए कोई भी देश एक सीमा से अधिक उसका विरोध करने की स्थिति में नहीं। ट्रंप इसी का लाभ उठाकर मनमानी कर रहे हैं। उनके बेलगाम होने का एक कारण यह है कि उसे चुनौती दे सकने वाला रूस यूक्रेन युद्ध में उलझा है। करीब चार साल पहले यूक्रेन पर रूस का हमला उसकी मनमानी ही था। लगता है उसकी इस हरकत ने ट्रंप को भी मनमानी करने का मौका दिया। अब वे बेलगाम हैं। वेनेजुएला पर हमले के बाद वे डेनमार्क के स्वायत्तशासी क्षेत्र ग्रीनलैंड पर कब्जा करने की बात कर रहे हैं। ग्रीनलैंड दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप है। ट्रंप इस बहाने ग्रीनलैंड पर कब्जा करना चाहते हैं कि उस पर रूस और चीन की निगाह है। उनका कहना है कि अमेरिकी हितों की रक्षा के लिए ग्रीनलैंड अमेरिका का हिस्सा होना चाहिए। ग्रीनलैंड में अकूत प्राकृतिक संपदा है, जिसका अभी तक दोहन नहीं किया गया है। अमेरिका के अंदर यह विचार पहले भी रहा है कि जिस तरह अलास्का उसके नियंत्रण में आया, उसी तरह ग्रीनलैंड भी आए। ट्रंप उस पर सैन्य कार्रवाई के जरिये कब्जा करने के अलावा उसे खरीदने की बात भी कह रहे हैं। हालांकि वहां के लोग इसका विरोध कर रहे हैं, लेकिन वे बेपरवाह हैं। उन्हें डेनमार्क के साथ यूरोपीय देशों की नाराजगी की भी चिंता नहीं, जबकि वे नाटो के भविष्य को खतरे में बता रहे हैं।

ट्रंप किस तरह अहंकार से भरे हुए हैं, इसका पता उनके इस कथन से चलता है कि उनकी आक्रामकता को सिर्फ वही रोक सकते हैं और अमेरिकी हितों के आगे किसी अंतरराष्ट्रीय नियम-कानून का कोई महत्व नहीं। यह तानाशाही वाला रवैया है। ट्रंप आक्रामक रणनीति पर इसलिए चल रहे हैं, क्योंकि अमेरिकी अर्थव्यवस्था बुरे दौर से गुजर रही है। उसे पटरी पर लाने के लिए उन्होंने अमेरिका आयात होने वाली वस्तुओं पर टैरिफ बढ़ा दिया है। उनका दावा है कि उनकी टैरिफ नीति से अमेरिका की आय बढ़ी है, लेकिन सच्चाई कुछ और है। ट्रंप इसलिए भी बौखलाए हुए हैं, क्योंकि डॉलर का प्रभुत्व कमजोर हो रहा है। डॉलर का प्रभुत्व तब बढ़ना शुरू हुआ, जब अमेरिका ने 1970 के दशक में सऊदी अरब से समझौता किया कि तेल का व्यापार डालर में होगा। इससे अमेरिका को लाभ मिला और डॉलर का प्रभुत्व बढ़ा, लेकिन बीते कुछ वर्षों में वह टूटा है। इसका कारण दुनिया के कई देशों का डॉलर से इतर मुद्रा में व्यापार करना है। रूस, वेनेजुएला, ईरान आदि देश तो अपना तेल डॉलर के बजाय अन्य मुद्रा में बेच रहे हैं। अमेरिका से आजिज आए कई देश डॉलर के बजाय अन्य मुद्रा में व्यापार करने की राह तलाश रहे हैं। ट्रंप को यह रास नहीं आ रहा है। उन्हें लगता है कि वे दुनिया को धमकाकर उसे डॉलर में व्यापार करने के लिए मजबूर कर लेंगे, लेकिन इसके उलटे नतीजे आएं तो हैरानी नहीं।

ट्रंप ने हाल में उस विधेयक को सहमति दी, जो उन्हें उन देशों पर 500 प्रतिशत टैरिफ लगाने की अनुमति देगा, जो रूस से तेल खरीदते हैं। इन देशों में चीन, भारत और ब्राजील प्रमुख हैं। ट्रंप का मानना है कि रूस से तेल खरीदने वाले देश उसे यूक्रेन के खिलाफ युद्ध जारी रखने में मदद कर रहे हैं। यदि ट्रंप रूस से तेल खरीदने वाले देशों पर सचमुच 500 प्रतिशत टैरिफ लगाते हैं, तो इससे भारत समेत अन्य देशों की कठिनाई बढ़ जाएगी। ट्रंप ने भारत पर पहले ही सबसे अधिक 50 प्रतिशत टैरिफ लगा रखा है।

इसमें 25 प्रतिशत व्यापार समझौता न हो पाने और 25 प्रतिशत रूस से तेल खरीदने के कारण है। ट्रंप प्रधानमंत्री मोदी को महान नेता और अपना दोस्त तो बताते हैं, पर उनके प्रति अशालीन भाषा का प्रयोग करने से भी नहीं हिचकते। वे ऐसा इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि मोदी उनकी मनमानी के समक्ष झुकने को तैयार नहीं। ट्रंप अपनी मनमानी से दूसरे विश्व युद्ध के बाद बनी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने में लगे हैं। उनकी मनमानी के कारण संयुक्त राष्ट्र आप्रसंगिक हो गया है।

अभियान

तिल, तप और त्याग का दिव्य संगम: षटतिला एकादशी का सनातन रहस्य

सनातन धर्म की परंपरा में एकादशी व्रत केवल उपवास का नियम नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, संयम और करुणा का गहन साधना-पथ है। माघ मास के कृष्ण पक्ष में आने वाली षटतिला एकादशी इसी साधना का एक अत्यंत प्रभावशाली और रहस्यमय स्वरूप है। यह तिथि भगवान विष्णु को समर्पित है और तिल के माध्यम से जीवन के सूक्ष्म से सूक्ष्म दोषों को दूर करने का संदेश देती है। शास्त्रों में माघ मास को पुण्य का भंडार कहा गया है और जब इसी मास में षटतिला एकादशी आती है, तब इसका आध्यात्मिक प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। यह एकादशी मनुष्य को यह समझाती है कि भक्ति केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें दान, त्याग और समाज के प्रति उत्तरदायित्व भी उतना ही आवश्यक है।

षटतिला एकादशी का मूल भाव तिल के महत्व से जुड़ा हुआ है। तिल को वैदिक काल से ही पवित्र, शुद्ध और पापों का नाश करने वाला माना गया है। शास्त्रों में कहा गया है कि तिल में भगवान विष्णु और यमराज दोनों का वास होता है, इसलिए तिल से किए गए कर्म इस लोक और परलोक दोनों में फल प्रदान करते हैं। माघ मास की ठंडी ऋतु में तिल शरीर को ऊर्जा देता है, रोगों से रक्षा करता है और मन को स्थिरता प्रदान करता है। यही कारण है कि इस एकादशी पर तिल का छह प्रकार से प्रयोग करने की परंपरा बनी, जिसने इसे षटतिला एकादशी का नाम दिया। यह परंपरा केवल कर्मकांड नहीं, बल्कि प्रकृति और अध्यात्म के गहरे संतुलन का प्रतीक है।

इस दिन प्रातःकाल तिल मिश्रित जल से स्नान करने की परंपरा आत्मिक और शारीरिक शुद्धि दोनों से जुड़ी है। माना जाता है कि तिल के स्पर्श से शरीर के सूक्ष्म पाप नष्ट होते हैं और मन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। तिल के तेल से उबटन या मालिश कर स्नान करने से शीत ऋतु में शरीर को बल मिलता है और यह कर्म तपस्या के भाव को भी प्रबल करता है। स्नान के बाद स्वच्छ वस्त्र धारण कर भगवान विष्णु का ध्यान किया जाता है। पंचामृत में तिल मिलाकर भगवान का अभिषेक करना विशेष पुण्यकारी माना गया है। यह अभिषेक केवल बाहरी कर्म नहीं, बल्कि साधक के भीतर छिपे अहंकार, लोभ और आसक्ति को धोने का प्रतीक है।

षटतिला एकादशी का व्रत संयम और अनुशासन का अभ्यास भी है। इस दिन अन्न का त्याग कर तिल से बने सात्त्विक पदार्थों का सेवन किया जाता है या निर्जल व्रत रखा जाता है। यह व्रत शरीर को हल्का और मन को एकाग्र बनाता है। रात्रि जागरण और विष्णु नाम-स्मरण से चेतना का स्तर ऊंचा उठता है। कहा जाता है कि इस एकादशी की रात्रि में किया गया जप और ध्यान सहस्र गुना फल देता है। यह समय आत्मनिरीक्षण का भी होता है, जब साधक अपने जीवन के कर्मों पर विचार करता है और भविष्य के लिए शुद्ध संकल्प लेता है।

इस एकादशी का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष दान से जुड़ा हुआ है। तिल और अन्न का दान इस दिन विशेष फलदायी माना गया है। शास्त्रों में यह स्पष्ट कहा गया है कि बिना दान के कोई भी धार्मिक कर्म पूर्ण नहीं होता। षटतिला एकादशी मनुष्य को यह सिखाती है कि भक्ति का वास्तविक स्वरूप तब प्रकट होता है, जब वह दूसरों के कष्ट को कम करने का माध्यम बने। तिल, गुड़, वस्त्र और अन्न का दान निर्धनों, ब्राह्मणों और जरूरतमंदों को किया जाता है। मान्यता है कि जितने तिल दान किए जाते हैं, उतने ही सहस्त्र वर्षों तक साधक स्वर्ग में निवास करता है। इसका गूढ़ अर्थ यह है कि दान से आत्मा पर लगे संस्कार शुद्ध होते हैं और चेतना उच्च लोकों की ओर अग्रसर होती है।

षटतिला एकादशी से जुड़ी पौराणिक कथा इस पर्व के संदेश को और अधिक स्पष्ट करती है। कहा जाता है कि एक बार नारद मुनि ने भगवान विष्णु से इस एकादशी के महत्त्व के बारे में पूछा। तब भगवान ने उन्हें एक कथा सुनाई। प्राचीन काल में पृथ्वी पर एक ब्राह्मण की पत्नी रहती थी, जो अत्यंत धर्मपरायण और विष्णु भक्त थी। वह नियमित रूप से व्रत और पूजा करती थी, किंतु उसमें एक कमी थी—वह कभी अन्न दान नहीं करती थी। भगवान विष्णु ने उसकी परीक्षा लेने के लिए स्वयं भिक्षुक का रूप धारण कर उससे भिक्षा मांगी। उस स्त्री ने श्रद्धा तो दिखाई, लेकिन भिक्षा में अन्न देने के स्थान पर मिट्टी का पिंड दे दिया। भगवान वह पिंड लेकर लौट आए।

कुछ समय बाद जब वह स्त्री देह त्याग कर वैकुंठ पहुंची, तो उसे वहां एक सूनी कुटिया मिली। कुटिया में अन्न और धन का अभाव देखकर वह विचलित हो गई और भगवान विष्णु से इसका कारण पूछा। तब भगवान ने उसे बताया कि यह स्थिति उसके द्वारा अन्न दान न करने का परिणाम है। इसके पश्चात भगवान ने उसे षटतिला एकादशी का व्रत करने और तिल व अन्न का दान करने की विधि बताई। जब उस स्त्री ने विधिपूर्वक यह व्रत किया, तो उसकी कुटिया अन्न और वैभव से भर गई। इस कथा के माध्यम से भगवान विष्णु ने यह स्पष्ट किया कि भक्ति तभी पूर्ण होती है, जब उसमें दान और करुणा का समावेश हो। षटतिला एकादशी का संदेश आज के युग में और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। आधुनिक जीवन में मनुष्य भक्ति को अक्सर केवल व्यक्तिगत मुक्ति का साधन मान लेता है, जबकि यह पर्व सिखाता है कि धर्म का वास्तविक उद्देश्य समाज के संतुलन को बनाए रखना है। तिल जैसा छोटा-सा बीज यह संकेत देता है कि छोटा-सा दान भी यदि श्रद्धा से किया जाए, तो वह बड़े पुण्य का कारण बन सकता है। यह एकादशी लोभ, संग्रह और स्वार्थ की प्रवृत्ति से ऊपर उठकर साझा करने की भावना को प्रोत्साहित करती है।

अंततः षटतिला एकादशी आत्मशुद्धि, संयम, दान और विष्णु भक्ति का समग्र पर्व है। यह मनुष्य को उसके कर्मों का स्मरण कराती है और यह बोध कराती है कि जीवन का उद्देश्य केवल स्वयं के लिए जीना नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में भी प्रकाश फैलाना है। जो व्यक्ति श्रद्धा, नियम और उदारता के साथ इस एकादशी का व्रत करता है, उसके जीवन से दरिद्रता, पाप और अशांति का नाश होता है और वह अंततः वैकुंठ की कृपा और आत्मिक संतोष को प्राप्त करता है। यही षटतिला एकादशी का सनातन सत्य और अमर संदेश है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

अतुल्य!भारत | सत्यमेव जयते गुजरात सरकार | Gujarat Tourism

INTERNATIONAL
KITE FESTIVAL
JANUARY 12TH TO 14TH, 2026

जहाँ हर पतंग की है अपनी कहानी!

अंतर्राष्ट्रीय पतंग महोत्सव 2026 के साथ गुजरात एक बार फिर अपने आकाश को विभिन्न रंगों से सराबोर करने के लिए तैयार है, जहाँ होगा परंपरा और पतंगबाजी के शाश्वत आनंद का अद्भुत संगम!

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री फ्रेडरिक मर्ज़
फेडरल चांसलर, फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

उद्घाटक
श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

मुख्य अतिथि
श्री फ्रेडरिक मर्ज़
फेडरल चांसलर, फेडरल रिपब्लिक ऑफ जर्मनी

गरिमामय उपस्थिति
श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

श्री हर्ष संघवी
माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

डॉ. जयरामभाई गामित
माननीय राज्य मंत्री, पर्यटन विभाग, गुजरात

12 जनवरी, 2026 | सुबह 8:00 बजे से | साबरमती रिवरफ्रन्ट, अहमदाबाद

मुख्य आकर्षण

अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पतंगबाजों द्वारा पतंगबाजी	हेरिटेज हवेली और पुरानी पोल संस्कृति का प्रदर्शन	हेरिटेज वॉक-वे पर थीम आधारित काइट म्यूज़ियम	फोटो वॉल इंस्टॉलेशन
रात्रि पतंगबाजी (13 जनवरी, 2026)	फूड स्टॉल्स	हस्तशिल्प बाजार	भव्य सिम्फनी प्रदर्शन

अधिक जानकारी के लिए क्यूआर स्कैन करें

वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस में उद्योगपतियों के प्रतिभाव

रिलायंस इंडस्ट्रीज आगामी पाँच वर्ष में गुजरात में 7 लाख करोड़ रुपए का निवेश करेगी : मुकेश अंबाणी

ग्रीन एनर्जी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तथा खेल-कूद क्षेत्र में बड़े उद्यमों द्वारा गुजरात को विश्व पटल पर ले जाने की मंशा

(जीएनएस)। गांधीनगर : वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस – कच्छ एवं सौराष्ट्र में रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबाणी ने गुजरात के लिए पाँच बड़ी एवं महत्वपूर्ण घोषणाएँ की हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में अंबाणी ने कहा कि रिलायंस गुजरात की पहचान है और गुजरात रिलायंस का हृदय है। इस अवसर पर उन्होंने राज्य के विकास के लिए रिलायंस की कटिबद्धता को संकल्प के रूप में घोषित किया।

रिलायंस अब तक गुजरात में सबसे बड़ा निवेशक रहा है। पिछले पाँच वर्ष में कंपनी ने 3.5 लाख करोड़ रुपए का निवेश किया है, जिसे आगामी पाँच वर्ष में दुगुना कर 7 लाख करोड़ रुपए किया जाएगा, जिससे रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

(1) जामनगर में विश्व का सबसे बड़ा एकीकृत ग्रीन एनर्जी इकोसिस्टम बनाया जा रहा है, जिसमें सोलर, ग्रीन हाइड्रोजन तथा सस्टेनेबल एविएशन फ्यूल जैसे उद्योगों का समावेश होगा। जामनगर अब हाइड्रोकार्बन के स्थान पर ग्रीन एनर्जी का बड़ा निर्यातक बनेगा।

(2) कच्छ में मल्टी-गीगावाट क्षमता वाला सोलर प्रोजेक्ट स्थापित किया जाएगा, जो भारत की ऊर्जा सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

(3) जामनगर में भारत का सबसे बड़ा एआई-रेडी डेटा सेंटर स्थापित किया जाएगा। जियो द्वारा एक विशेष इंटेलिजेंस प्लेटफॉर्म लॉन्च किया जाएगा, जिसका प्रारंभ गुजरात से होगा। इससे आम नागरिक अपनी भाषा में एआई सेवा का उपयोग कर सकेगा।

(4) प्रधानमंत्री के 2036 में अहमदाबाद में ओलंपिक लाने के विजन को समर्थन देने के लिए रिलायंस फाउंडेशन गुजरात सरकार के साथ जुड़ेगा। नारणपुरा स्थित वीर सावरकर मल्टी-स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का संचालन रिलायंस संभालेगा।

(5) सौराष्ट्र के जामनगर में विश्व स्तरीय अस्पताल की स्थापना की जाएगी और शिक्षा क्षेत्र में सुविधाओं का दायरा बढ़ाया जाएगा। मुकेश अंबाणी ने कहा कि भारत आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विश्व की एक बड़ी शक्ति बन रहा है और यह भारत का निर्णायक दशक है।

कच्छ के मुंद्रा में आगामी पाँच वर्ष में अदाणी ग्रुप 1.50 लाख करोड़ रुपए का पूंजी निवेश करेगा : करण अदाणी

अदाणी पोर्ट तथा स्पेशल इकोनॉमिक ज़ोन के एमडी श्री करण अदाणी ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में भारत निरंतर आगे बढ़ रहा है। उनके मार्गदर्शन में कच्छ सबसे बड़ा एनर्जी हब बना है। अदाणी ग्रुप के लिए मुंद्रा कर्मभूमि है तथा सोलर मैन्युफैक्चरिंग के लिए मुंद्रा महत्वपूर्ण सेंटर बना है। अदाणी ग्रुप विश्व का सबसे बड़ा एनर्जी पार्क मुंद्रा में बना रहा है, जो 37 गीगावाट का एनर्जी पार्क बनेगा। उन्होंने जोड़ा कि कच्छ के मुंद्रा में आगामी पाँच वर्ष के दौरान अदाणी ग्रुप द्वारा 1.50 लाख करोड़ रुपए का निवेश किया जाएगा तथा देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत@2047 के सपने को यह ग्रुप साकार करने के लिए सतत उनके साथ रहेगा।

वेलस्पन के चेयरमैन श्री बी. के. गोयंका की 5000 करोड़ रुपए की लागत से विश्व का सबसे बड़ा पाइपलाइन प्लांट स्थापित करने की घोषणा

वेलस्पन कंपनी के चेयरमैन श्री बी. के. गोयंका ने गौरवपूर्वक कहा कि कच्छ हमारी जन्मभूमि है। एक समय कच्छ-सौराष्ट्र में सबसे बड़ी पानी की समस्या थी, परंतु पिछले दो दशक में सौराष्ट्र-कच्छ की कायापलट हुई है। आज सौराष्ट्र-कच्छ रिफाइनरी पोर्ट तथा सिरेमिक के लिए विख्यात बना है। इस क्षेत्र का विकास पिछले 20 वर्ष में हुआ है, जिसका श्रेय मैं देश के प्रधानमंत्री को देता हूँ। उन्होंने जोड़ा कि आज वेलस्पन एक लाख से अधिक लोगों को रोजगार दे रही है। उन्होंने 2003 की वाइब्रेंट समिट को याद करते हुए कहा कि उस समय मैं वापी में प्लांट लगाने वाला था, परंतु देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने मुझसे यह कहा था कि आप अपना प्लांट कच्छ में स्थापित करेंगे, तो आपको एक रुपए के निवेश के सामने एक डॉलर का प्रतिफल मिलेगा। यह बात आज सच्चे अर्थ में सार्थक हुई है। हमारी कंपनी गुजरात में आगामी समय में विश्व के सबसे बड़े पाइपलाइन प्लांट की स्थापना के लिए 5000 करोड़ रुपए का निवेश करेगी।

ज्योति सीएनसी मैन्युफैक्चरिंग तथा आर एंड डी में स्किल क्षेत्र में 10 हजार करोड़ रुपए का निवेश करेगी : पराक्रमसिंह जाडेजा

ज्योति सीएनसी के चेयरमैन पराक्रमसिंह जाडेजा ने राजकोट की धरा पर आयोजित हुई वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस प्रधानमंत्री के विकसित भारत@2047 के सपने को साकार करने वाली समिट है। वाइब्रेंट समिट के माध्यम से गुजरात देश का ग्रोथ इंजन बना है। यह कोई बिजनेस कॉन्फ्रेंस नहीं, बल्कि विकसित भारत का विजन अब क्षेत्र, जिला, स्थानीय औद्योगिक इकोसिस्टम तक पहुँच रहा होने का संकेत है। विश्व में आज अस्थिरतापूर्ण माहौल के बीच भी भारत देश प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में दृढ़ एवं स्थिर बनकर खड़ा है और आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि हमारा ध्येय बहुत ही स्पष्ट है कि मैन्युफैक्चरिंग केवल बिजनेस नहीं है, बल्कि हमारी जिम्मेदारी है। हमारी कंपनी आगामी पाँच वर्ष में 10 हजार करोड़ रुपए का निवेश करेगी। एयरोस्पेस तथा डिफेंस सेक्टर को भी मशीनरी प्रदान करने के लिए ज्योति सीएनसी तत्पर है। आत्मनिर्भर भारत के लिए हम सब साथ मिलकर इस उम्दा कार्य को आगे बढ़ाने का अभियान चलाएंगे।

वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस अंतर्गत 'कार्बन से फसल तक हरित अणु, अधिक उत्पादन' विषय पर परिसंवाद आयोजित हुआ

(जीएनएस)। गांधीनगर : दो दिवसीय वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस अंतर्गत रविवार को 'कार्बन से फसल तक : हरित अणु, अधिक उत्पादन' विषय पर परिसंवाद आयोजित हुआ। इस परिसंवाद का मुख्य उद्देश्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैश्विक जलवायु परिवर्तन तथा बढ़ती जा रही खाद्यान्न की मांग के बीच कृषि क्षेत्र के लिए नवीन एवं टिकाऊ उपयोग और हरित ऊर्जा की ओर प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण बने हैं। कार्बन से फसल तक की विचारधारा ऐसा नूतन दृष्टिकोण है, जिसमें हवा में रहे कार्बन डाइऑक्साइड या उद्योगों से निकलने वाले कार्बन का उपयोग कर खेती के लिए उपयोगी हरित अणु (ग्रीन मोलेक्यूलस) तैयार किए जाते हैं। परिसंवाद में विभिन्न वक्ताओं द्वारा बताया गया कि हरित ऊर्जा संबंधी प्रयासों तथा भविष्य में कैसे प्रयास किए जा सकते हैं तथा कार्बन को जिम्मेदारी नहीं, बल्कि अवसर के रूप में देखकर ग्रीन एनर्जी का स्रोत बनाना चाहिए। इसके अलावा, हरित अणुओं का उपयोग जैव उर्वरक, बायोस्टिम्युलेंट्स, मिट्टी सुधारक तत्व तथा फसल वृद्धि प्रोत्साहक के रूप में होता है। परिणामस्वरूप जमीन की उपज क्षमता में वृद्धि होती है और फसल की जड़ मजबूत बनती है तथा पौधे में पोषक तत्वों का शोषण अधिक प्रभावशाली बनता है। कार्बन आधारित हरित अणुओं के उपयोग से फसल का उत्पादन उल्लेखनीय रूप से बढ़ता है, रासायनिक खाद पर निर्भरता घटती है, जमीन का स्वास्थ्य एवं जीवंतता बने रहते हैं, पानी के उपयोग में कार्यक्षमता बढ़ती है, कृषि अधिक पर्यावरणीय संतुलित तथा टिकाऊ बनती है। यह दृष्टिकोण केवल कृषि उत्पादन बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि कार्बन उत्सर्जन घटाने, जलवायु परिवर्तन से लड़ने और किसानों की आय में वृद्धि करने के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार; कार्बन से फसल तक की हरित यात्रा टेक्नोलॉजी तथा आधुनिक खेती का समन्वय साधकर भविष्य की खाद्य सुरक्षा के लिए मजबूत नींव तैयार करती है, जहाँ हरित अणु अधिक उत्पादन का साधन बनते हैं और कृषि विकास का नया अध्याय लिखते हैं। भारत देश के पास विद्यमान ग्रीन एनर्जी तथा ग्रीन हाइड्रोजन क्षमताओं का विस्तार कर भारत के साथ गुजरात को भी इस क्षेत्र में उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करने के लिए सकारात्मक चर्चाएँ परिसंवाद में की गईं।

चांदोद- एकतानगर रेल खंड की होगी कायापलट तिलकवाड़ा स्टेशन B क्लास स्टेशन बना

(जीएनएस)। डभोई - एकता नगर के बीच चांदोद-एकता नगर खंड के तिलकवाड़ा स्टेशन को वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के कुशल मार्गदर्शन में B क्लास के रूप में कमीशन कर लिया गया है। तिलकवाड़ा स्टेशन का अपग्रेडेशन सिर्फ एक स्टेशन नहीं बल्कि एक 32 किलोमीटर लंबे रेलखंड की काया पलट है।

अब यह स्टेशन साधारण स्टॉपिंग पॉइंट से उन्नत सिग्नलिंग, एक बेहतर ऑपरेशनल क्षमता और अधिक यात्री सुविधाओं वाला स्टेशन बन गया है, जो वडोदरा मंडल की एक बड़ी उपलब्धि है।

तिलकवाड़ा स्टेशन के अपग्रेडेशन से पहले चांदोद - एकतानगर सेक्शन पूरी

तरह सैचुरेटेड था यानि अतिरिक्त ट्रेन के परिचालन के लिए संभावना कम थी। 10 जनवरी 2026 को नानइंटरलाकिंग कार्य संपन्न होने से तिलकवाड़ा स्टेशन को नया रूप मिला है। अब यह सिर्फ एक छोटा सा स्टॉप नहीं बल्कि क्रॉसिंग स्टेशन है यहां ट्रेन अब पास हो सकती हैं। इसके लिए एक नई लूप लाइन और दो हाई लेवल प्लेटफार्म का निर्माण किया गया है, जो ट्रैफिक और एफिशिएंसी को बढ़ाते हैं।

तिलकवाड़ा स्टेशन के B क्लास में अपग्रेड होने से अब इस रूट पर ऑपरेशनल एफिशिएंसी, समय की पाबंदी और इस प्रतिष्ठित सेक्शन में और ट्रेनें चलाने की संभावना बेहतर होगी।

तिलकवाड़ा को B-क्लास स्टेशन में बदलने से एकतानगर और चांदोद के बीच मौजूदा सिंगल ब्लॉक सेक्शन दो ब्लॉक सेक्शन में बंट गया है, यानी एकतानगर – तिलकवाड़ा और तिलकवाड़ा –चांदोद। एक साधारण हॉल्ट से एक फंक्शनल ब्लॉक स्टेशन में बदलने से चांदोद और एकतानगर के बीच ट्रेन परिचालन क्षमता बढ़ेगी, जिससे संरक्षा में वृद्धि होगी। साथ ही सेक्शन कैपेसिटी बढ़ने से इस सेक्शन में और अधिक ट्रेनों को परिचालित करने का विकल्प मिलेगा।

भविष्य में, ट्रेनों की संख्या बढ़ने पर, तिलकवाड़ा एक फायदेमंद ऑपरेशनल पॉइंट के तौर पर काम करेगा, जिससे ट्रेन रेगुलेशन और ऑपरेशनल फ्लेक्सिबिलिटी बेहतर होगी। एकतानगर से शुरू होने वाली ट्रेनों का लाईन क्लियर के लिए रुकने का समय कम हो जाएगा, जिससे ऑपरेशन आसान होगा और समय की पाबंदी बेहतर होगी।

B-क्लास स्टेशन बनने से तिलकवाड़ा स्टेशन पर यात्री सुविधाओं में भी इज़ाफा हुआ है, यात्रिओं को स्टेशन पर पैदल ऊपरी पुल, वेटिंग रूम और टिकट काउंटर जैसी सुविधाएँ प्रदान की गई हैं, जिससे यात्रिओं का सफ़र और सुखकर होगा। स्टेशन पर एक हाई-लेवल प्लेटफॉर्म का निर्माण किया गया है, जिससे यात्रियों को ट्रेन में चढ़ने और उतरने के दौरान ज़्यादा सुविधा और सुरक्षा मिलेगी।

अपग्रेड होने से पहले डभोई और एकतानगर के बीच तिलकवाड़ा एक D-क्लास (फ्लैग स्टेशन) स्टेशन था, जहाँ सिर्फ एक प्लेटफॉर्म और कुछ बुनियादी सुविधाएं थी। फ्लैग स्टेशन होने के कारण कोई सिग्नल नहीं था और ऑपरेशन के लिए कोई समर्पित रेलवे स्टाफ नहीं था।

सोमनाथ में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आगमन से पूर्व शिव भक्ति तथा देश भक्ति का माहौल

वेरावळ की 10 वर्षीय नन्हीं बालिका जिनल जेठवा ने भारत माता बनकर फहराया तिरंगा, भारत माता की जय के नारे लगे

(जीएनएस)। गांधीनगर : सोमनाथ में हमारी आस्था, संस्कृति तथा विरासत को उजागर करने वाला सोमनाथ स्वाभिमान पर्व मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सोमनाथ पधारे हैं, तब मुख्य कार्यक्रम स्थल पर उनके आगमन से पूर्व शिव भक्ति के साथ देश भक्ति के वातावरण का सृजन हुआ।

वेरावळ में कक्षा 4 में पढ़ाई करने वाली 10 वर्षीय नन्हीं बालिका जिनल देवेन्द्रभाई जेठवा ने भारत माता बनकर तिरंगा फहराया। उनकी देश भक्ति देखकर आसपास के लोगों ने भी हर हर महादेव के साथ भारत माता की जय के नारे लगाए। इस अवसर पर मंच से कलाकारों ने 'दिल दिया है, जान भी देंगे...' तथा 'ये देश है वीर जवानों का...' जैसे गीतों से देश भक्ति का माहौल बनाया।

अहमदाबाद मंडल की अपील: उत्तरायण पर्व सुरक्षित रूप से मनाएँ, हाई-वोल्टेज ओवरहेड तारों से दूर रहें

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के सभी रेलखंडों में रेलवे लाइन के ऊपर 25,000 वोल्ट (25 केवी) की ओवरहेड इलेक्ट्रिक (OHE) हाई-वोल्टेज तारें स्थापित हैं। अक्सर देखा गया है कि पतंग उड़ाते समय धागे इन तारों में फँस जाते हैं। कुछ धागों में धातु के अंश या नमी होने के कारण उनमें विद्युत प्रवाह हो सकता है, जिससे करंट नीचे तक पहुँच सकता है। ऐसी स्थिति पतंग उड़ाने वाले व्यक्तियों के साथ-साथ रेलवे ट्रैक के समीप से गुजरने वाले नागरिकों एवं ट्रैक पर कार्यरत रेल कर्मचारियों के लिए भी अत्यंत घातक सिद्ध हो सकती है।

अहमदाबाद मंडल ने जनसामान्य के लिए चलाया सुरक्षा जागरूकता अभियान

अहमदाबाद मंडल द्वारा जनसामान्य के लिए सुरक्षा जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है,

जिसके अंतर्गत रेलवे पटरियों के आसपास रहने वाले नागरिकों को काउंसलिंग के माध्यम से आवश्यक सावधानियों के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

अहमदाबाद मंडल द्वारा जारी मुख्य निर्देश एवं अपील:

1.पटरियों से दूरी बनाए रखें: सुरक्षा एवं कानून की दृष्टि से रेलवे ट्रैक के आसपास पतंग न उड़ाएँ।

2.हाई-वोल्टेज तारों को न छुएँ: यदि पतंग या धागा ओवरहेड तारों में फँस जाए, तो उसे निकालने के लिए किसी भी प्रकार की छड़, डंडे या उपकरण का प्रयोग न करें।

3.बच्चों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दें: अभिभावक यह सुनिश्चित करें कि बच्चे पतंग पकड़ने के लालच में रेलवे ट्रैक की ओर न जाएँ।

4.रेल कर्मचारियों की सुरक्षा: ओवरहेड तारों में फँसे धागे ट्रैक पर कार्यरत रेलकर्मियों के लिए भी गंभीर खतरा उत्पन्न करते हैं।

रेल प्रशासन सभी नागरिकों से अपील करता है कि वे स्वयं सतर्क रहें तथा दूसरों को भी जागरूक करें, ताकि उत्तरायण पर्व को सुरक्षित एवं आनंदमय ढंग से मनाया जा सके। आपकी सतर्कता न केवल आपकी सुरक्षा सुनिश्चित करती है, बल्कि दूसरों के जीवन की रक्षा भी करती है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने महात्मा मंदिर से जूना सचिवालय तक मेट्रो में यात्रा की

(जीएनएस)। गांधीनगर। गुजरात में आधुनिक, सुरक्षित और तेज शहरी परिवहन व्यवस्था को और मजबूत करने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने रविवार को गांधीनगर मेट्रो परियोजना के दूसरे चरण के रूट पर मेट्रो ट्रेन में यात्रा की। दोनों नेताओं ने महात्मा मंदिर मेट्रो स्टेशन से जूना सचिवालय तक मेट्रो में सफर कर न केवल इस महत्वाकांक्षी परियोजना की प्रगति का प्रत्यक्ष अनुभव किया, बल्कि आम यात्रियों के साथ संवाद कर मेट्रो सेवा को लेकर उनकी राय और अनुभव भी जाने। मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री के मेट्रो में सफर के दौरान ट्रेन में मौजूद आम

नागरिकों, विद्यार्थियों, कर्मचारियों और बुजुर्ग यात्रियों में विशेष उत्साह देखने को मिला। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने यात्रियों से सहज और आत्मीय बातचीत करते हुए पूछा कि मेट्रो सेवा से उन्हें किस प्रकार की सुविधाएं मिल रही हैं, समय की कितनी बचत हो रही है और दैनिक आवागमन में मेट्रो कितनी उपयोगी साबित हो रही है। यात्रियों ने मुख्यमंत्री को बताया कि मेट्रो के शुरू होने से सड़क यातायात पर निर्भरता कम हुई है, ट्रैफिक जाम से राहत मिली है और कम समय में सुरक्षित एवं आरामदायक यात्रा संभव हो पाई है।

विद्यार्थियों ने मेट्रो को उनके लिए अत्यंत उपयोगी बताते हुए कहा कि इससे कॉलेज और कोचिंग तक पहुंचना आसान हो गया है। वहीं, सरकारी कर्मचारियों ने जूना सचिवालय और आसपास के कार्यालयों तक मेट्रो कनेक्टिविटी को समय और ऊर्जा की बचत करने वाला कदम बताया। कई यात्रियों ने मेट्रो की स्वच्छता, नियमितता, वातानुकूलित कोच और आधुनिक सुरक्षा व्यवस्था की भी सराहना की।

भद्रकाली मंदिर के शिलालेख में उत्कीर्णित सोमनाथ का कालजयी इतिहास कुमारपाल के शासन काल तथा सोमनाथ के पुनरुत्थान की जीवंत कथा

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रभास पाटण की यह पवित्र धरती अनेक ऐतिहासिक धरहरों और सभ्यताओं को संजोए बैठी है। यह भूमि कितनी पवित्र, समृद्ध एवं स्वर्णिम अतीत की स्वामी है कि इसके वैभव की यहाँ के ताम्रपत्र, अभिलेख तथा शिलालेख साक्षी देते हैं। आज भी शौर्य गाथा की गर्वपूर्ण रण गर्जना करने वाले नंदी इस भूमि के पराक्रम की गवाही देते हैं। प्रभास पाटण तथा सोमनाथ देवालय के इतिहास को उजागर करने वाले आभिलेखिक प्रमाण, प्रमाणभूत अवशेष प्रभास क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर स्थित हैं। सोमनाथ तथा प्रभास क्षेत्र के देदिप्यमान अमर इतिहास के प्रमाण देने वाले शिलालेख और ताम्रपत्र प्रभास पाटण म्यूजियम में संरक्षित हैं। अनेक आक्रमणों से ध्वस्त मंदिर के अवशेष शौर्य, शक्ति एवं समर्पण के जीवंत प्रमाण के रूप में आज भी म्यूजियम में जतन करके रखे हुए हैं। हाल में यह म्यूजियम प्रभास पाटण में पौराणिक सूर्य मंदिर में कार्यरत है।

▸▸ प्रभास पाटण की भूमि में संरक्षित पुरातत्वीय प्रमाणों तथा सोलंकी काल का स्थापत्य हमारी अनमोल धरोहर

▸▸ तीर्थभूमि सोमनाथ के पत्थर करते हैं गर्वपूर्ण रण गर्जना, ताम्रपत्रों तथा अभिलेखों में धड़कती सनातन संस्कृति

▸▸ प्रभास पाटण म्यूजियम में संरक्षित हैं प्रभास पाटण तथा सोमनाथ देवालय के इतिहास को उजागर करने वाले आभिलेखिक प्रमाण एवं प्रमाणभूत अवशेष

इस म्यूजियम के अधीनस्थ ऐसा ही एक शिलालेख प्रभास पाटण में म्यूजियम के निकट पुराने राम मंदिर के बगल में भद्रकाली फळिया (मोहल्ले) में स्थित है। सोमपुरा ब्राह्मण दीपकभाई दवे के निवास स्थान पर यह ऐतिहासिक धरोहर संरक्षित है। उनके प्रांगण में स्थित पौराणिक भद्रकाली मंदिर की दीवार पर यह शिलालेख आज भी जड़ित है।

प्रभास पाटण म्यूजियम क्यूरेटर (संग्रहलायध्यक्ष) श्री तेजल परमार ने विवरण देते हुए बताया कि ई. स. 1169 (वलभी संवत 850 तथा विक्रम संवत 1255) में उत्कीर्णित तथा हाल में राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित यह शिलालेख अणहिलवाड पाटण के महाराजाधिराज कुमारपाल के धर्मगुरु परम पाशुपताचार्य श्रीमद् भावबृहस्पति का प्रशस्ति लेख है। इस अभिलेख में सोमनाथ मंदिर का पौराणिक एवं मध्य कालीन इतिहास लिपिबद्ध है। इस अभिलेख में चारों युगों में सोमनाथ महादेव के निर्माण का उल्लेख है, जिसके अनुसार सतयुग में (चंद्र) सोम ने सोने का, त्रेता युग में रावण ने चांदी का, द्वापर युग में श्री कृष्ण ने काष्ट का और कलियुग में राजा भीमदेव सोलंकी ने सुंदर पाषाण का कलात्मक देवालय बनवाया था।

इतिहास के पन्नों पर दृष्टि डालें, तो मंदिर के पुराने अवशेषों पर भीमदेव सोलंकी द्वारा चौथे मंदिर का निर्माण किए जाने का तथ्य प्रमाणभूत है। इसके बाद ई. स. 1169 में कुमारपाल का पाँचवाँ मंदिर भी उसी स्थान पर बना था। सोलंकी शासकों के काल में प्रभास पाटण केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि स्थापत्य एवं साहित्य का भी केन्द्र था। सिद्धराज जयसिंह की न्यायप्रियता तथा कुमारपाल की धर्मनिष्ठा ने सोमनाथ के शिखर को गौरव के उच्चतम सोपना पर स्थापित किया, जो आज भी गुजरात के स्वर्णिम काल की गरिमापूर्ण प्रतीति कराता है।

प्रभास पाटण की इस पवित्र मृदिंका (धरती) उसके उदर में केवल अवशेषों को ही नहीं, अपितु सनातन धर्म के आत्मगौरव को भी संग्रह किए बैठी है। भद्रकाली फळिया के इस ऐतिहासिक शिलालेख में उत्कीर्णित अक्षरमाला आज भी सोलंकी शासकों के समर्पण एवं भावबृहस्पति जैसे ज्ञानियों के पुरुषार्थ की प्रतीति कराती है। शिल्प, स्थापत्य तथा साहित्य के त्रिवेणी संगम समान यह भूमि उसकी ऐतिहासिक विरासत द्वारा आने वाली पीढ़ियों को हमारे स्वर्णिम अतीत की झाँकी कराती रहेगी। प्रभास की यह देदिप्यमान विरासत तथा सोमनाथ का अजेय शिखर इस बात की प्रबल साक्षी देते हैं कि समय चाहे जितना बलवान हो, परंतु भक्ति तथा स्वाभिमान के शिखर सदैव अविनाशी रहते हैं।

'विकसित गुजरात से विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने वाली 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस : कच्छ एवं सौराष्ट्र' का राजकोट से भव्य प्रारंभ

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से पाँच दिवसीय बिजनेस एग्जीबिशन का उद्घाटन

▸▸ प्रधानमंत्री ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, मुख्य सचिव श्री एम. के. दास की प्रेरक उपस्थिति में कच्छ-सौराष्ट्र की औद्योगिक क्षमता तथा कला-कौशल की प्रदर्शनी देखी

▸▸ 18,000 वर्ग मीटर में फैले एग्जीबिशन में 'एंटरप्राइज एक्सीलेंस' से लेकर 'हर घर स्वदेशी' की झाँकी

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को राजकोट के मारवाड़ी विश्वविद्यालयसे 'विकसित गुजरात से विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने वाली 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस : कच्छ एवं सौराष्ट्र' तथा पाँच दिवसीय बिजनेस एग्जीबिशन का गरिमापूर्ण शुभारंभ कराया। क्षेत्रीय आकांक्षाओं के साथ वैश्विक महत्वाकांक्षा के मंत्र को चरितार्थ करने वाले इस आयोजन में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री एवं गृह राज्य मंत्री श्री हर्ष संघवी थथा मुख्य सचिव श्री एम. के. दास आदि महानुभावों की प्रेरक उपस्थिति रही।

उद्घाटन के बाद प्रधानमंत्री ने 18,000 वर्ग मीटर में फैली इस विशाल प्रदर्शनी को देखा। उन्होंने 'एंटरप्राइज एक्सीलेंस पैवेलियन' में हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, एस्सार, न्यारा एनर्जी तथा ज्योति सीएनसी जैसी अग्रणी इकाइयों द्वारा देश के आर्थिक विकास में दिए जा रहे योगदान का निरीक्षण किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने गुजरात की बढ़ती जा रही औद्योगिक शक्ति तथा टेक्नोलॉजिकल प्रगति की

प्रशंसा की।

कच्छ एवं सौराष्ट्र के समुद्र तट की असीम क्षमताओं को उजागर करने वाले 'ओशन ऑफ अपॉर्चुनिटीज' पैवेलियन में प्रधानमंत्री ने विशेष रुचि दर्शाई। गुजरात मैरीटाइम बोर्ड द्वारा ब्लू इकोनॉमी के विकास की प्रस्तुति तथा रिलायंस न्यू एनर्जी जैसे स्टॉल्स द्वारा प्रदर्शित नई टेक्नोलॉजी ने आकर्षण जमाया। इस प्रदर्शनी में उद्योग जगत के विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण के समन्वय की झाँकी प्रस्तुत की गई है। स्थानीय कला एवं उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए 'हर हर स्वदेशी' के मंत्र के साथ एमएसएमई पैवेलियन तैयार किया गया है। प्रधानमंत्री ने यहाँ ग्रामीण कारीगरों की हस्तकला तथा स्वदेशी हाट को देखा, जहाँ उन्होंने बुक रिव्यू में अपने प्रतिभाव भी दर्ज किए। 15 जनवरी तक चलने वाली यह प्रदर्शनी विद्यार्थियों तथा सामान्य नागरिकों के लिए ज्ञानवर्धक बनी रहेगी और 'विकसित@2047' के लक्ष्य को नई गति देगी।

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन द्वारा संचालित बाल मंदिर एवं किड्स हट स्कूल का वार्षिक समारोह संपन्न

(जीएनएस)। दिनांक 10 जनवरी 2026 को पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO) भावनगर मंडल द्वारा संचालित बाल मंदिर एवं किड्स हट स्कूल का वार्षिक समारोह हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा उपस्थित रहे।

समारोह में अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमाँशु शर्मा, वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण भी मौजूद

रहे। महिला कल्याण संगठन की ओर से अध्यक्ष श्रीमती शालिनी वर्मा, उपाध्यक्ष श्रीमती मोनिका शर्मा, कोषाध्यक्ष श्रीमती वंदना पाटीदार, सचिव श्रीमती माया त्रिपाठी, स्कूल इंचार्ज श्रीमती सरोज मौर्य एवं श्रीमती वाणी सहित अन्य महिला पदाधिकारी उपस्थित रहीं। इस अवसर पर दोनों विद्यालयों के लगभग 220 बच्चों ने भाग लिया और रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुतियाँ दीं। बच्चों की मनमोहक एवं जीवंत प्रस्तुतियों ने उपस्थित सभी दर्शकों का मन मोह लिया और कार्यक्रम में उत्साह का संचार किया। समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के सभी विजेता प्रतिभागियों को मंडल रेल प्रबंधक द्वारा प्रमाण पत्र एवं ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही दोनों विद्यालयों के कई शिक्षकों को "बेस्ट टीचर अवार्ड" तथा दोनों स्कूलों के प्रधानाचार्यों को "बेस्ट प्रिंसिपल" ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया।

अपने संबोधन में मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने बच्चों की प्रतिभा की सराहना करते हुए दोनों स्कूलों के बच्चों के लिए 5000/- के पुरस्कार की घोषणा की। कार्यक्रम का समापन उत्साह, उल्लास एवं सकारात्मक ऊर्जा के साथ हुआ। यह पूरा कार्यक्रम पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा की देखरेख में संपन्न हुआ।